PAGE:
DATE: / /

★ क्रिप्स मिशन ★

1885 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ~~सम्पन्न हो गई~~ के साथ ही भारत मे राष्ट्रीय आन्दोलन वास्तविक अर्थों मे प्रारंभ हो गया था 1930 ई० तक विभिन्न चरणों को पार करते हुए कांग्रेस ने अपना लक्ष्य पूर्ण स्वतन्त्रता तो क्या औपनिवेशिक स्वराज्य भी भारतीयों को देने के लिये तैयार न थी। 1935 के अधिनियम द्वारा प्रान्तों मे उत्तरदायी सरकार की स्थापना की गई किन्तु यह अधिनियम भारतीय भावनाओं को सन्तुष्ट न कर सका। सितम्बर 1939 ई० मे द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ होने पर इंग्लैण्ड ने भारत रक्षा अधिनियम पारित करके भारत में कार्यरत नौकरशाही को युद्ध प्रयासो हेतु विशेष अधिकार प्रदान किये गये इंग्लैण्ड ने भारतीयो की ओर से भी जर्मनी, इटली व जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। मित्र राष्ट्रों ने यह भी घोषणा की कि वे प्रजातन्त्र को सुरक्षित करने की भावना से युद्ध कर रहे है। कांग्रेस ने सरकार से अनुरोध किया कि वह अपने उद्देश्यों को स्पष्ट करे तथा 14 सितम्बर 1939 ई० को कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित करके सरकार से भारतीयों को आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान करने को कहा। कांग्रेस ने यह भी स्पष्ट किया कि लोकतन्त्र की रक्षा के लिये किये जा रहे युद्ध मे भारत को तभी सम्मिलित

PAGE :
DATE :

(2)

किया जाना चाहिये जब भारत मे पहले लोकतन्त्र की स्थापना की जाये। मौलाना आजाद ने सरकार की नीति की भर्त्सना करते हुए कहा " वायसराय की इस कार्यवाही ने यह स्पष्ट कर दिया कि अंग्रेजी सरकार भारत को अपने हाथ का खिलौना समझती है। यह युद्ध जैसे महत्त्वपूर्ण मामले मे भी भारतीयो की इच्छा जानना आवश्यक नही समझती "

किन्तु सरकार ने टालमटोल की नीति का सहारा लिया तथा अपने उद्देश्यो को स्पष्ट करना नही चाहती थी। अन्त मे 17 अक्टूबर 1939 ई० को वायसराय लार्ड लिमलिथगो ने घोषणा की " भारत मे ब्रिटिश शासन का उद्देश्य औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना करना है।" इस घोषणा से भारतीयो को अत्यन्त निराशा हुई। अतः 22 अक्टूबर 1939 को कांग्रेस ने एक निन्दा प्रस्ताव पारित किया तथा सभी मन्त्रालयो से त्यागपत्र देने का अनुरोध किया। अतः कांग्रेस ने 8 प्रदेशो मे प्रान्तीय मन्त्रालयो से त्यागपत्र दे दिये। मुस्लिम लीग इससे प्रसन्न हुई। सरकार फूट डालने मे सफल हुई। किन्तु कांग्रेस युद्धकाल मे अंग्रेजो के विरुद्ध आन्दोलन करना नही चाहती थी 23 जुलाई 1940 को कांग्रेस ने पुनः सरकार से निवेदन किया कि वह भारत की स्वतन्त्रता की मांग को स्वीकार कर लेती भारत इंग्लैण्ड की सहायता करने को तैयार है लेकिन चर्चिल इसके

Scanned with CamScan

लिये तैयार नहीं हुआ अतः वायसराय लिनलिथगो ने 8 अगस्त 1940 ई० को एक घोषणा की जो 'अगस्त प्रस्ताव' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे भारतीयों को गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी सभा तथा युद्ध परामर्श समिति पर एक समिति बनाई जायेगा। युद्ध की समिति पर एक समिति बनाई जायेगी जो। भारत के भावी संविधान की रूपरेखा का निर्धारण करेगी। इस समिति मे कॅाग्रेस मुस्लिम लीग व इसी प्रकार के अन्य दल भी भाग लेंगे।

इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया गया और कांग्रेस द्वारा सत्याग्रह करने का निश्चय किया गया। 1941 ई० मे मित्र राष्ट्रो की युद्ध मे स्थिति गंभीर हो गई। जापान ने रंगून पर अधिकार कर लिया और उसके भारत पर आक्रमण की संभावना हो गई। इस संकट का सामना करने के लिये भारतीयो का सहयोग आवश्यक था अतः इंग्लैण्ड पर अमेरिका, चीन आदि देशो ने दबाव डाला। अतः भारत की समस्या पर विचार करने व उसे सुलझाने के लिये सर स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत भेजा गया।

I क्रिप्स मिशन :⇒

सर स्टेफर्ड क्रिप्स समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे। वे 23 मार्च 1942 को दिल्ली पहुँचे उन्होंने कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हिन्दु महासभा हरिजनो राजाओ उदारवादी नेताओ से विचार-विमर्श किया तथा 30 मार्च 1942 को कुछ प्रस्तावों की घोषणा की। क्रिप्स को भारत भेजने के निम्नलिखित कारण थे

1) इस समय मित्र राष्ट्रो की निरन्तर पराजय हो रही थी मित्र राष्ट्र जापान को यूरोप में तो आगे बढ़ने से रोकने रोके रखने मे सफल हुए परन्तु एशिया मे

Scanned with CamScanner

जापान की विजय वाहिनी अप्रतिहत गति से आगे बढ़ी। मलाया, इण्डो-चायना और इण्डोनेशिया ने जापान की सेनाओं के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। 8 मार्च 1942 को जापान ने रंगून पर कब्जा कर लिया। बर्मा के पतन से ब्रिटिश सरकार बहुत घबराई। चर्चिल ने स्वीकार किया कि यदि इंग्लैण्ड को भारत की रक्षा करनी है तो राजनैतिक गतिरोधों को दूर करना चाहिये। भारत के सिर पर मण्डराते खतरे ने कांग्रेस की नीति मे परिवर्तन कर दिया। पुनः जवाहरलाल नेहरू के हाथ मे कांग्रेस का नेतृत्व आ गया। वे ~~देश~~ देश को प्रतिरक्षा के लिये संगठित करना चाहते थे। वे सरकार के साथ सहयोग करने के लिये कुछ शर्तो पर तैयार थे। इस जापान की पूर्वी विजय ने ब्रिटिश सरकार को विवश कर दिया कि वह भारत की ओर नया दृष्टिकोण अपनाये राजनैतिक गतिरोध को दूर करने के उद्देश्य से क्रिप्स मिशन को भारत भेजा गया।

2). फरवरी 1942 मे राष्ट्रवादी चीन के नेता मार्शल च्यांग काई-शेक भारत आये और उन्होंने इंग्लैण्ड से अपील की कि वह भारत की स्वतन्त्रता की मांग पर सहृदयता पूर्वक विचार करे। उन्होंने विदाई सन्देश मे यह कहा कि भारत के प्रतिनिधियों को वास्तविक शक्ति दे दी जाये और जब तक भारत अपनी स्वतन्त्र इच्छा से युद्ध मे भाग नहीं लेगा तब तक वा

उतनी सहायता नहीं देगा जितना वह दे सकता है।

3. चर्चिल ने सितम्बर 1941 ई० में एटलांटिक-चार्टर को भारत मे लागू करने से इन्कार कर दिया, चार्टर मे युद्ध की समाप्ति पर प्रत्येक राष्ट्र को आत्म-निर्णय का अधिकार देने का निश्चय किया गया। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने चर्चिल पर इस बात का दबाव डालना आरंभ किया कि वह युद्ध मे भारत का ऐच्छिक सहयोग प्राप्त करने के लिये कुछ करे।

4. आस्ट्रेलिया के विदेश मन्त्री इवाट् ने आस्ट्रेलिया की पार्लियामेन्ट मे कहा कि भारत को स्वराज्य दे दिया जाय ताकि भारत युद्ध मे अपना पूर्ण सहयोग दे सके।

इस प्रकार युद्ध के संकटो और विश्व जनमत के दबाव ने क्रिप्स मिशन के लिये रंगमंच तैयार किया। रंगून पतन के चार दिन बाद "मार्च 1942 को चर्चिल ने संसद मे घोषणा की कि वे जापान की प्रगति के कारण भारत के लिये जो खतरा पैदा हो गया है उसे देखते हुए हम यह आवश्यक समझते है कि सभी वर्गों का संगठन करना चाहिये और सर स्टैफर्ड क्रिप्स ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे भारतीय गतिरोध का अन्त करने के लिये भारत को प्रस्थान करेगे। इस घोषणा का भारत स्वागत किया गया था। भारत की परिस्थितियो का अध्ययन करने के लिये क्रिप्स 22 मार्च 1942 को भारत आये। उन्होने वायसराय तथा केन्द्रीय कार्यकारिणी परिषद् के सदस्यो से बातचीत की तथा इसके बाद भारतीय

नेताओं से मिले। क्रिप्स ने जो प्रस्ताव पेश किये वे क्रिप्स योजना के नाम से प्रसिद्ध है। ये प्रस्ताव निम्न लिखित थे।

II भविष्य के सम्बंध में :→

(युद्ध के बाद लागू होने वाले प्रस्ताव) →

1. उपनिवेश या अधिराज्य की स्थापना :- (औपनिवेशिक स्वराज्य) :→

प्रारूप में कहा गया भारत के साथ की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के सम्बंध में इंग्लैण्ड और भारत में जो चिंताएं जाहिर की गई उनको ध्यान में रखते सम्राट की सरकार ने भारत में शीघ्र-से शीघ्र स्वशासन (Self Govt) के विकास के लिये निश्चित कदम उठाने का निश्चय किया है। ब्रिटिश सरकार एक नये भारतीय संघ की उत्पत्ति करना चाहती है जो एक ऐसा अधिराज्य (Dominion) होगा जो ब्रिटिश ताज की तरफ अपनी भक्ति रखने के कारण इंग्लैण्ड में तथा अन्य उपनिवेशों से अपना सम्बंध रखेगा। यह अधिराज्य हर दृष्टि से दुसरे उपनिवेशों के बिलकुल समान होगा और आन्तरिक तथा बाहरी मामलों के किसी के अधीन नही होगा। क्रिप्स योजना का यह प्रस्ताव महत्वपूर्ण है। अभी तक ब्रिटिश सरकार ने केवल औपनिवेशिक स्वराज्य को स्वीकार किया गया था। किन्तु अब क्रिप्स ने यह स्पष्ट कर दिया था कि भारत को स्वाधीनता पूर्व उपनिवेश का दर्जा प्रदान किया जायेगा। इसके द्वारा ब्रिटिश सरकार युद्ध में

PAGE :
DATE : / /

भारतीयो का सहयोग प्राप्त करना चाहती थी।

2. संविधान सभा की स्थापना :→
युद्ध की समाप्ति होने के एकदम बाद भारत मे एक निर्वाचित परिषद् बैठने के लिये कदम उठाये जायेगे। जिसका कार्य भारत के लिये एक नया संविधान तैयार करना होगा।

3. संविधान सभा मे देशी रियासते :→
संविधान सभा मे देशी रियासतो का भी प्रतिनिधित्व होगा। देशी राज्यो के प्रतिनिधि राजाओ द्वारा मनोनीत भी हो सकते है। देशी रियासते भी नया संविधान मानने के बाध्य नही होगी।

4. प्रान्तो को अलग संविधान बनाने का अधिकार :→
जो प्रान्त संविधान सभा द्वारा बनाये गये संविधान से सहमत नहीं होगे, वे चाहे तो अपना अलग संघ बना सकते है। उन्हे अपने लिये नया संविधान बनाने का अधिकार होगा। इनकी स्थिति भी भारतीय संघ की तरह ही होगी।

5. संविधान सभा की रचना :→
युद्ध की समाप्ति के बाद संविधान सभा का निर्माण किया जायेगा जिसमे ब्रिटिश भारत और देशी रियासतो के प्रतिनिधि अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होगे। ब्रिटिश प्रान्तो के प्रतिनिधि प्रान्तीय विधानमण्डलो के निम्न सदन द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर चुने जायेगे।

Scanned with CamScanner

PAGE
DATE / /

निर्वाचन मण्डलों में जितने सदस्य होंगे। उनके 10% सदस्य संविधान के सभा में भेजे जायेंगे। जहां तक राज्यों का सम्बंध है वे अपनी जनसंख्या के अनुपात में अपने प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे।

6. संविधान सभा भारत के लिये जो संविधान तैयार करेगी उसे स्वीकार करने और कार्यान्वित करने का उत्तरदायित्व ब्रिटिश सरकार अपने ऊपर लेती है किन्तु उसमे दो शर्ते होगी।

(A) यदि ब्रिटिश भारत का कोई प्रान्त उस संविधान से सहमत न हो तो वह अपनी वर्तमान कानूनी स्थिति बनाये रख सकता है यदि भविष्य में वह संघ मे प्रवेश करना चाहे तो कर सकता है। यदि किसी प्रान्त की संविधान सभा 60% बहुमत से संघ में रहने का निश्चय नहीं करती तो उसके संघ में प्रविष्ट होने का अन्तिम निर्णय जनमत संग्रह द्वारा हो सकेगा। नये संघ मे सम्मिलित न होने वाले प्रान्तो को सम्राट की सरकार नया संविधान देने को तैयार होगी। देशी रियासतो के लिये भी यह व्यवस्था की जायेगी।

क्रिप्स की इस योजना के पीछे ब्रिटिश सरकार की यह नीति स्पष्ट थी कि वह भारत में अभी भी अपना ~~प्रभुत्व~~ का प्रभुत्व कायम रखना चाहती है।

(b) संविधान सभा व ब्रिटिश सरकार के बीच एक

PAGE:
DATE: / /

सन्धि की जायेगी जिसमे इस विषय का समावेश होगा कि ब्रिटिश सरकार भारतीयो को शक्ति हस्तान्तरित करे। ब्रिटिश सरकार द्वारा समय-2 पर अल्पसंख्यको को जो आश्वासन दिये गये है उनकी रक्षा भी इस संधि मे की जायेगी

III वर्तमान के सम्बंध में :→ (युद्ध के समय लागू होने वाले सुझाव)→

योजना के प्रारूप में कहा गया कि जब तक युद्ध चल रहा है भारत की रक्षा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व शासन पर रहेगा। क्रिप्स के शब्दो में "इस नाजुक समय मे और नए संविधान के बनने तक भारत की रक्षा की जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार रहेगी। किन्तु भारत की जनता के सहयोग से देश के सम्पूर्ण संयुक्त नैतिक, सैनिक तथा आर्थिक साधनो को संगठित करने का उत्तरदायित्व भारत सरकार का होगा। ब्रिटिश सरकार भारतीय नेताओ का अपने देश, राष्ट्रमण्डल तथा संयुक्त राष्ट्रो के परामर्श में पूरा सहयोग चाहती है। इस तरह से भारतीय नेताओ को उस कार्य मे अपना रचनात्मक सहयोग देने का अवसर मिलेगा जो भारत के भविष्य के लिये बहुत आवश्यक है।

इन प्रस्तावो द्वारा सभी दलो को प्रसन्न करने का प्रयास किया गया था। पट्टाभि सीतारमैया ने ठीक ही कहा है - कि प्रस्ताव मे विभिन्न रुचियो को संतुष्ट करने के लिये विभिन्न पदार्थ थे। कांग्रेस की औपनिवेशिक स्वराज्य तथा इंग्लैण्ड से सम्बंध तोड़ने तथा राष्ट्रमण्डल से अलग हो सकने की मांग को स्वीकार कर लिया गया था। संविधान सभा के विषय में भी उसकी मांग को स्वीकार

Scanned with CamScanner

कर लिया था रियासतो और मुस्लिम लीग को काफी रियासते दी गई थी। रियासतो को नवीन संविधान मजिल्स मानने अथवा न मानने की छूट था। मुस्लिम बहुल प्रान्तो को नये संविधान को मानने या अपनी वर्तमान सर्वैधानिक स्थिति को कायम रखने का अधिकार दे दिया। फिर भी कोई दल इन प्रस्तावो से सन्तुष्ट नही था।

iv कांग्रेस द्वारा प्रस्तावो की अस्वीकृति :→

(a) कांग्रेस को सबसे बड़ी आपत्ति इस बात से थी कि क्रिस ने अप्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से मुसलमानो के अलग राज्य की मांग स्वीकार कर ली थी। प्रस्तावो के अनुसार, प्रान्तो को संविधान मे सम्मिलित होने अथवा न होने की स्वतन्त्रता दी गई थी। उन्हे अलग संघ बनाने की स्वतन्त्रता थी। दुसरे शब्दो मे यह पाकिस्तान के निर्माण पर स्वीकृति की मोहर लगाना ही था। मुस्लिम बहुल प्रान्त कभी भी संघ में सैंधिक रूप से सम्मिलित नही होते।

(b) कांग्रेस इस बात को भी स्वीकार नही कर सकती थी कि संविधान सभा मे रियासतो को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार वहा की जनता को न होकर शासको को था। इससे वहाँ की जनता की उपेक्षा होती। दूसरे देशी शासक अंग्रेजो को प्रसन्न करने की कोशिश करते और देश की प्रगति मे बाधक बनते।

(c) युद्ध के पश्चात् भारत और ब्रिटेन के बीच सत्ता हस्तान्तरण के सम्बंध में एक संधि की

PAGE :
DATE : / /

व्यवस्था की गई थी। इसके अनुसार ब्रिटेन भारत को सत्ता सौंपने से पूर्व इस बात का आश्वासन और पूरी गारन्टी चाहता था कि भारत में अल्पमतो की सुरक्षा हो दूसरे शब्दो मे इसका अर्थ यही था कि संविधान बन जाने के बाद भी अल्पमतो की रक्षा के नाम पर ब्रिटेन अपनी नियन्त्रण भारत को नहीं सौंपा गया था। नए संविधान के निर्माण तक भारतीय रक्षा तथा उससे युद्ध सम्बंधी निर्णयो पर सम्राट का नियन्त्रण था। चुकी क्रिप्स भारत के प्रतिनिधियो को देश की रक्षा के पर प्रभावशाली नियन्त्रण देने के लिये तैयार नही था। इसलिये कांग्रेस के पास उसके सुझावो को अस्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा नही था।

(c) कांग्रेस इस बात पर बहुत बल देती थी कि वर्तमान विषय स्थिति को देखते हुए केन्द्र मे एकदम राष्ट्रीय हुकुमत स्थापित कर दी जाय, वायसराय के पास नाम मात्र की शक्तियां रहे और असली शक्तियां भारतीय प्रतिनिधि के हाथ में आ जाये। महात्मा गाँधी ने इन प्रस्तावो के विषय मे कहा था कि यह आगे की तारीख में भुनाये जा सकने वाला चैक है।

2. मुस्लिम लीग द्वारा अस्वीकृति :-

(a) मुस्लिम लीग ने इन प्रस्तावो को ठुकरा दिया क्योकि उसकी मुख्य शिक्षा यह थी कि इसमें पाकिस्तान की मांग को स्पष्ट रूप स्वीकार नही किया गया था।

(b) इन सुझावो में हिन्दु और मुस्लिम दोनो के लिये अलग-2 संविधान सभा का सुझाव नही था।

Scanned with CamScanner

(c) लीग का मानना था कि संविधान सभा में मुसलमानो के प्रतिनिधित्व पृथक चुनाव-पद्धति द्वारा होना चाहिये। संविधान सभा मे निर्णय बहुमत द्वारा होगे, इसलिये वे हिन्दुओ की दया पर आश्रित रहे।

(d) सत्ता हस्तान्तरण के विषय में अभी भारत और ब्रिटेन शर्ते तय नहीं की गई थी।

(e) लीग को इस बात पर एतराज था कि जो अन्तरिम व्यवस्था की गई, उसमे न तो कोई ठोस सुझाव है न ही लीग विशेष उपलब्धि।

(f) प्रान्तीय विधानमण्डल में मुसलमानो की प्रतिनिधित्व सन्तोषजनक नही है।

3 अन्य दलो द्वारा अस्वीकृति :→

यह योजना मुस्लिम लीग और कांग्रेस के अतिरिक्त हिन्दु महासभा और अकाली दल और हरिजनो ने भी क्रिप्स 'एन' अमान्य कर दिया। सिख पंजाब मे पाकिस्तान निर्माण के विरोधी था। हिन्दु महासभा ने भी विभाजन के आधार पर इसे अस्वीकार दिया। और हरिजन नेताओ ने इन प्रस्तावो को इसलिये रद्द कर दिया क्योंकि वे ऊची ऊंची जाति के हिन्दुओ की दया पर आश्रित हो जाते।

V क्रिप्स के सुझावो की असफलता के कारण :→

1) दुरस्थ योजना :→ इस योजना के महायुद्ध के समाप्त होने के भारत मे

औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना करने का आश्वासन तो सन्तोषजनक था किन्तु इसका सम्बंध वर्तमान से न होकर किसी भविष्य से था। गांधी के अनुसार "यह भविष्य की तीथि का ऐसे बैंक के नाम के चैक था जिसकी दशा स्पष्टतः खराब होती जा रही थी।

(b) प्रस्तावो की ~~अपर्याप्त~~ अपर्याप्तता :→ क्रिप्स के प्रस्तावो की अपर्याप्तता का मुख्य कारण यह था कि वे भारतीय स्थिति को हल करने के लिए काफी नहीं थी। प्रान्तो के संविधान सभा मे प्रतिनिधि भेजने के लिये इकाई लिया था संविधान सभा बनाने के ढंग साम्प्रदायिकता और प्रादेशिकता पर निर्भर था। संघीय विधानमण्डलो मे संविधान सभा के स्थानो पर बंटवारा किसी न्यायपुर्ण ढंग से नहीं किया गया था। संविधान सभा, जिसको साम्प्रदायो के लिये आरक्षित प्रतिमानो के आधार पर चुना जाना था, उससे यह नहीं की जा सकती ~~थी~~ थी कि वह साम्प्रदायिक समस्याओ और प्रादेशिक झगड़े के विरुद्ध भारतीय के हितो का विचार करेंगे।

भारतीय रियासतो के जो प्रतिनिधि जो कि राजाओ और महाराजाओ द्वारा नामजद किये जाते थे, वे प्रतिक्रियावादी शक्तियो से मिलकर एक ठोस गुट बनालेते थे। प्रान्तो की स्वतन्त्र रह सकने की छूट से भारतीय एकता नष्ट होने की संभावना थी। इससे भारत कई टुकड़ो मे बंट जाता। इन ~~कु~~ सुझावो मे वर्तमान समस्याओ को सुलझाने हेतु कोई सन्तोष जनक व्यवस्था नहीं थी।

2. अंग्रेज अधिकारियो का स्वार्थ व ~~हर~~ असहयोग:-

अंग्रेज अधिकारी भारत को वास्तविक स्वतन्त्रता देना नही चाहते थे। क्रिप्स ने भारत में अपनी बातचीत के समय प्रधान मन्त्री चर्चिल से कई बार परामर्श किया, परन्तु चर्चिल भारतीयो को कोई वास्तविक शक्ति देने के पक्ष मे नही था। लास्की ने लिखा है कि सरकार ने सर स्टैफर्ड क्रिप्स को भारत की समस्याओ को हल करने के सच्चे इरादे से नही भेजा था। असली विचार भारत को स्वाधीनता देना नही बल्कि मित्रराष्ट्रो की आँखो मे ~~ह~~ धूल झोकना था जो अमेरिका और फिलिपाइन द्वीप समूहो के सम्बंधो तथा ~~ग्रेट~~ ब्रिटेन और भारत के सम्बंध में जमीन-आसमान का अन्तर पाते ~~है~~ थे।

3. लार्ड हैलिफैक्स का व्यक्तव्य:->

क्रिप्स के सुझावो पर कांग्रेस की कार्य समिति निर्णय करने लगी थी, लार्ड हैलीफैक्स (former g.g.) ने एक भाषण मे कांग्रेस की कड़ी आलोचना करते हुए कहा "यदि हमारे ये सारे प्रयत्न असफल रहे तो ब्रिटिश सरकार को भारत के बड़े और व्यवस्थित करने के सहयोग के बीना अपना कर्तव्य पूरा करने पर सबसे बड़ा और सुव्यवस्थित दल है कोई ~~सह~~ सहयोग प्राप्त नही किया उन्होने यह भी कहा की 'भारत के अन्य

PAGE:
DATE: / /

दलों ने कांग्रेस के समस्त देश का प्रतिनिधित्व करने का सख्त विरोध किया है" इन वक्तव्यो से कांग्रेस मे तीव्र प्रतिक्रिया हुई। क्रिप्स ने भी कांग्रेस को एक पत्र लिखकर उन पर अल्पसंख्यक वर्ग पर आधिपत्य जमाने का आरोप लगाया। इससे कांग्रेस का रुख प्रस्तावो के कठोर से प्रति कठोर हो गया।

अंग्रेजो के प्रति विश्वास मे कमी:→ भारत मे अंग्रेजो प्रति बड़ा भारी अविश्वास था। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के समय दिये हुए अपने वचनो का पालन नही किया था। इसके बाद भी ब्रिटिश सरकार झूठे वायदे करती रही थी और भारतीयो को भी कुछ वास्तविक शक्ति नही देना चाहती थी। अंग्रेजो ने समय-2 राष्ट्रवादियो को केवल कुचला ही था। इस वातावरण मे सवैधानिक मांगो की सफलता की कोई आश" नही थी।

क्रिप्स की गलत धारणाए और परिस्थिति से की संभलने की दक्षता दिखाना:→ क्रिप्स की भारत सम्बन्धी नियमो मे दी गई गलत धारणाए थी। वह समझता था उसके सुझाव ही भारत के लिये उपयुक्त है उसका यह गलत विचार था कि कांग्रेस मे नेहरू का निर्णय है।

क्रिप्स ने भारतीय स्थिति को भी ठीक ढंग नही सुलझाया। पहले वह केन्द्र मे एक राष्ट्रीय सरकार और मंत्रिमण्डल की स्थापना के लिये मान लिया परन्तु बाद मे ब्रिटिश

प्रधानमन्त्री तथा वायसराय के दबाव के कारण अपनी बात से पीछे हटने लगा। इससे राष्ट्रीय नेताओं का उस पर से विश्वास हट गया और उनमें क्रिप्स प्रस्तावों की तरफ रक्षा उत्पन्न हो गई।

कांग्रेस की सैद्धान्तिक दृढ़ता:→

कांग्रेस सैद्धान्तिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए कृतसंकल्प थी। कांग्रेस के नेता आजाद ने कहा था "युद्ध ने भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति का सुअवसर दिया है। हमें केवल अंग्रेजों के वचनों पर विश्वास करके इसे खोना नहीं चाहिये। यदि अंग्रेज अपने वचनों से फिर गये, तो फिर दुबारा आन्दोलन करने के लिये भी कोई उचित कारण नहीं मिल दिखाई देगा। यदि हमने क्रिप्स के सुझावों को मान लिया तो हमें बाद में पछताना पड़ेगा।" अंग्रेज केवल भारतीय समस्या का समाधान चाहते थे, कांग्रेस भारत की आजादी चाहती थी।

प्रतिरक्षा तथा वायसराय के निषेधाधिकार का प्रश्न:→

कांग्रेस की यह मांग थी कि केन्द्र में एक राष्ट्रीय हुकूमत स्थापित की जाये जिसकी सलाह से वायसराय बोच्चे हो। इसका सीधा अर्थ था कि वायसराय की शक्तियों पर नियन्त्रण लगाया जाय, ब्रिटिश सरकार इसके लिये तैयार नहीं थी। वह मात्र कार्यकारिणी परिषद् में भारतीयों को प्रतिनिधित्व देकर

Scanned with CamScanner

सन्तुष्ट करना चाहती थी।

इसके अतिरिक्त प्रतिरक्षा विभाग पर कॉंग्रेस भारतीयों का प्रभावशाली नियन्त्रण चाहती थी। क्रिप्स इस से मामले मे केवल यहाँ तक तैयार हुआ था कि प्रतिरक्षा से संबंधित कुछ साधारण मामलों पर भारतीय प्रतिरक्षा मन्त्री का नियन्त्रण स्थापित होगा शेष प्रतिरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण मामले प्रधान सेनापति के पास ही रहेंगे।

क्रिप्स के सुझावों का वापस लिया जाना:->

जब भारत के प्रमुख दलों ने क्रिप्स के सुझावों को मानने से इन्कार कर दिया तो क्रिप्स ने 11 अप्रैल 1942 को उन सुझावों को वापस तो लिया जब मिशन खाली हाथ लौटा तो भारतीयों को अत्यन्त निराशा, क्रोध और क्षोभ हुआ। क्रिप्स मिशन की असफलता का साफ मतलब था कि ब्रिटिश सरकार अत्यन्त संकट के समय मे भी भारत मे न तो अन्तरिम सरकार बनाने के लिये तैयार है न युद्ध पश्चात भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिये। इससे भारत मे एक अलग ही जागृति उत्पन्न हुई जिसकी परिणति 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के रूप मे हुई।

Scanned with CamScanner